आज की मुरली का सार -- Date: 09-05-2014

बाबा ने कहा, तुम सिद्ध करके बताओ कि बेहद का बाप हमारा बाप भी है, शिक्षक भी है और सतगुरु भी है.

पहले हम समझे की शिव को ही बेहद का बाप क्यों कहते हैं. क्योंकि वह सर्व मनुष्य आत्माओं का पिता हैं. कैसे?

भगवान के लिए एक बात सब धर्मों में हैं कि भगवान सत्य हैं (god is Truth).लेकिन किसी भी देवी-देवता या धर्मात्मा या संत-आत्माओं के लिए ये नहीं कहा जाता, की वह सत्य हैं, तो भगवान उन सबसे उंचा हैं. भक्ति में हम एक शिव के लिए ही कहते हैं, शिव ही सत्य हैं. तो शिव ही भगवान हो सकते हैं.

दूसरी बात, जो सब धर्मों में है, कि भगवान स्वयं आते हैं, या प्रगट होते हैं (god is incarnated). भक्ति में भी हम एक शिव के लिए ही कहते हैं, शिव स्वयंभु प्रगट होते हैं. तो शिव ही भगवान होगे.

तीसरी बात, जो सब धर्मों में हैं, कि भगवान एक ज्योति स्वरूप है (god is light). भगवान देहधारी नहीं हैं. भक्ति में भी हम एक शिव के लिए ही कहते हैं, कि शिव निराकार हैं और पूजा भी लिंग के रूप में ही करते हैं तो शिव ही भगवान होने चाहिये.

चोथि बात, जो सब धर्मों में हैं और सब मानते भी हैं, भगवान सबसे उंचा हैं (god is highest) और हम सब मनुष्य आत्माये जिसमें दैवी-देवता, धर्मात्माये या संत-आत्माये भी आ जाते हैं वे सब उसके बच्चे हैं. भक्ति में भी हम शिव को सबसे उपर कैलाश में बैठे हुए दिखाते हैं और शिव के लिए ही भक्ति में कहते हैं, वह हमारा परमपिता-परमात्मा हैं. **तो अब समझा जिसकी हम कई जन्मो से भक्ति करते है, वही शिव की महिमा तो सर्व धर्मो मे भी हैं.** तो अब समझा शिव ही भगवान हैं और वही सर्व आत्माओं का पिता हैं इसलिए उन्हें बेहद का बाप कहा जाता हैं.

शिवबाबा अभी तीन रोल कैसे बजाते हैं?

भक्ति में हम जीतने भी देवी-देवताये, माताये है इनमें से किसको भी परमपिता-परमात्मा नहीं कहते हैं, एक शिव के सिवाय. लेकिन ये समझते नहीं थे की शिव हमारे पिता कैसे हो सकते है क्योंकि शिव और शंकर को एक कर दिया हैं. अब बाप ने खुद आकर हमें ये ज्ञान दिया हैं कि शिव निराकार है जब की शंकर आकारी देवता हैं. ये हम सब जानते है कि हम सब आत्माये है. लेकिन बाबा ने हमें बताया की हम आत्माओं का सत्य स्वरूप एक ज्योतिर्मय सितारा है, जो ब्रुकुटि में रहकर पार्ट बजाती हैं. जब हम आत्मायें निराकार, स्टार रुप में है तो हमारा पिता भी निराकार ही होना चाहिये. एक शिव को ही हम निराकार कहते हैं और भक्ति भी उसकी लिंग के रुप में करते हैं. इस बात से सिद्ध होता है कि शिव ही हम आत्माओं के परमपिता है.

भक्ति में हम भगवान को ज्ञान का सागर कहते है, तो उन्होंने आकर मनुष्यों को ज्ञान दिया हैं लेकिन जानते नहीं की उन्होंने हमें क्या और कब ज्ञान दिया. वही परमपिता-परमात्मा अभी स्वयं आकर हमें आत्मा, परमात्मा और सारी सृष्टि के आदी, मध्य और अन्त का संपूर्ण सत्य ज्ञान दे रहें हैं. जो आत्मा ये ज्ञान की गहराई को समझती हैं, वही आत्मा मानेगी की ये ज्ञान स्वयं भगवान के सिवाय और कोई नहीं दे सकता. ये ज्ञान से हम आत्माओं में जो परिवर्तन आता हैं, वह अनुभव के आधार पर हमने माना हैं की ये ज्ञान सचमुच परमपिता-परमात्मा, शिवबाबा के सिवाय और कोई नहीं दे सकता. इसे ये सिद्ध होता है कि भगवान ही हमारा टिचर बनकर हमें पढ़ा रहा हैं.

भारत में आगे ये रस्म थी की 60 वर्ष की आयु के बाद सब वानप्रस्थ में जाते थे और गुरु आदि करते थे, जिसे की आत्मा को सद्गति मिले. बाद में अब तो छोटपन में भी गुरु करते है की जिसे बच्चा गलत रास्ते पर ना चला जायें और ये अच्छी बात है लेकिन इसे गुरु करने का जो ध्येय था की गुरु ही सद्गति करता है वह सिद्ध नहीं होता. अब कल्प के संगम पर स्वयं भगवान ने आकर हमें बताया कि सच्चा सतगुरु भी वही है, क्योंकि भगवान ही सब आत्माओं की गति-सद्गति करते हैं या सब को मुक्ति-जीवनमुक्ति देते हैं. इसे सिद्ध होता है की वही सतगुरु भी हैं. ॐ शांति.